YOUNG INDIA > YOUNG PAPER

NBT

संडे नवभारत टाइम्स

लखनऊ > रविवार,25 मई 2014 > ज्येष्ठ 4 शक 1936 > ज्येष्ठ कृष्ण 12 विक्रम 2071

जरा हटके | भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने डिवेलप किया सॉफ्टवेयर

गन्ने को कौन सी बीमारी, बताएगा सॉफ्टवेयर

■ एनबीटी, लखनऊ

गन्ने की फसल को कौन सी बीमारी हुई है या होने वाली है। अब इसकी जानकारी कोई विशेषज्ञ नहीं बल्कि एक सॉफ्टवेयर देगा। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने इस वेब सॉफ्टवेयर को डिवेलप क़िया है। इसका सबसे ज़्यादा फायदा ये होगा कि समय रहते बीमारी का पता लग जाने से गन्ने का इलाज किया जा सकेगा।

उत्तर प्रदेश देश का बड़ा गन्ना उत्पादक है। गन्ने की फसल को 200 से ज्यादा कीट नुकसान पहुंचाते हैं। इस फसल में 30 बीमारियां लगती हैं जो फसल को चौपट कर देती हैं। इन कीटों और बीमारियों के कारण प्रति वर्ष देश भर के गन्ना उत्पादकों को 7 हजार से 10 हजार करोड़ का नुकसान होता है। इससे गन्ना उत्पादन में 20 प्रतिशत की कमी आ जाती है। इस नुकसान को रोकने के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान के कम्प्यूटर विभाग ने एक सॉफ्टवेयर बनाया है। यह एक कम्प्यूटर आधारित प्रणाली है जो गन्ने के रोग और कीट को पहचानेगा। इससे बीमारी को दूर करने के लिए क्या उपाय किया जाए पता चल सकेगा। इसके अलावा यह सॉफ्टवेयर किसानों को यह भी बताएगा कि किसान किस तरह से खेती करे कि गन्ने की फसल बीमारी से बची रहे। अभी तक ऐसी कोई भी पद्धति नहीं थी, जिससे गन्ने में लगने वाली बीमारी और कीटों की सटीक पहचान हो सके। इस सॉफ्टवेयर को बनाने का श्रेय संस्थान के कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ एस.एस.हसन और उनकी टीम को जाता है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए.के. साह ने बताया कि गन्ना हमारे देश की प्रमुख नकदी फसल है। देश भर में लगभग पांच करोड़ किसान और पांच लाख मजदूर इस खेती से जुड़े हैं। इनकी समृद्धि इसी खेती से जुड़ी है।

ग्रामीण क्षेत्रों तक होगी पहुंच

डॉ. हसन ने बताया कि यह सॉफ्टवेयर वेब आधारित है, इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों तक इसकी पहुंच हो सकती है। इंटरनेट के जरिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सॉफ्टवेयर इंग्लिश के साथ हिंदी में भी है। यह सॉफ्टवेयर गन्ने पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों, किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। इसका उपयोग केवल बीमारी को पहचानने के लिए ही नहीं बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के लिए भी किया जा सकता है। इसका उपयोग करने के लिए यूजर आईडी और पासवर्ड की जरूरत है। इसके लिए सॉफ्टवेयर में रजिस्ट्रेशन जरूरी है।

राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
...रादून • वाराणसी से प्रकाशित
लखनऊ । रविवार • 25 मई • 2014

साफ्टवेयर देगा गन्ना रोग की जानकारी

लखनऊ (एसएनबी)। गन्ने की फसल में प्रमुख नाशी कीटों व रोगों के साथ ही पोषक तत्वों की कमी से होने वाले विकारों की पहचान के लिए एक विशेषज्ञ प्रणाली (केनडेस) विकसित की गयी है। कम्प्यूटर आधारित इस प्रणाली के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक (कम्प्यूटर विज्ञान) डा. एसएस हसन व उनकी टीम ने इसका साफ्टवेयर विकसित किया है। यह तकनीक गन्ना किसानों को गन्ने के विभिन्न जैविक और अजैविक कारकों के कारण उत्पन्न विकारों को पहचानने में सहायता करता है और उनके नियन्त्रण के लिए आवश्यक उपाय भी सुझाता है। सही समय पर इनकी रोकथाम न होने से गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में 20 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है।

डा. हसन ने बताया कि गन्ना हमारे देश की प्रमुख नकदी फसल है जो चीनी उद्योग के लिए मुख्य निवेश है। देश भर में राज्यों के लगभग पांच करोड़ किसान और पांच लाख मजदूर इस उद्योग पर आजीविका एवं आर्थिक समृद्धि के लिए निर्भर हैं।

डा. हसन ने बताया कि यह साफ्टवेयर वेब

■ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने विकसित की नयी विशेषज्ञ प्रणाली

आधारित है और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से प्रयोग में लाया जा सकता है। इंग्लिश के अलावा साफ्टवेयर की हिन्दी में उपलब्धता हमारे हिन्दी क्षेत्र के किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। गन्ने में शोध, शिक्षा, विकास, विस्तार और उत्पादन से जुड़े सभी लोगों के लिए यह साफ्टवेयर अत्यन्त उपयोगी हैं। इसका उपयोग न केवल विकारों को पहचानने में बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। इसका उपयोग करने के लिए जरूरी यूजर आईडी व पासवर्ड साफ्टवेयर में पंजीकरण करके लिया जा सकता है।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट सहकर्मी ने बताया कि दो सौ से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग सात हजार से 10 हजार करोड़ रुपये का नुकसान होता है।

इस साफ्टवेयर की सहायता ने सही समय पर विकारों की पहचान व निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा।

युनाइटेड भारत, लखनऊ, 25 मई, 2014

गन्ना अनुसंधान संस्थान ने विकसित की नई विशेषज्ञ प्रणाली

लखनऊ २४ मई। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने गन्ना शोध यात्रा में एक और महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। संस्थान ने गन्ने के प्रमुख नाशी कीटों, रोगों और पोषक तत्वों की कमी से होने वाले विकारों की पहचान के लिए एक विशेषज्ञ प्रणाली विकसित की है। यह एक कम्प्यूटर आधारित प्रणाली है जो गन्ने में विभिन्न जैविक और अजैविक तनाव कारकों के कारण उत्पन्न विकारों को पहचानने में सहायता करता तथा नियंत्रण के लिए आव यक उपाय सुझाते हैं। यह सर्वविदित है कि गन्ने में लगने वाले नाशी कीटों और रोग फसल को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। सही समय पर इनकी रोकथाम न होने से गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में २० प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। डा. एस. एस. हसन, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कम्प्यूटर विज्ञान) और उनकी टीम के अथक प्रयासों से संस्थान ने यह सफलता प्राप्त की है। गन्ना हमारे देश की प्रमुख नकदी फसल है जो चीनी उद्योग के लिए मुख्य कच्चा माल है। देशभर में राज्यों के लगभग ५ करोड़ किसान और ५ लाख मजदूर इस उद्योग पर आजीविका एवं आर्थिक समृद्धि के लिए निर्भर हैं। डा. ए.के. साह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट सहकर्मी ने बताया कि २०० से ज्यादा कीट और ३० से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग ७०००-१०००० करोड़ रूपए का नुकसान होता है। केनडेस्क की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा। डा. हसन, ने बताया कि यह सॉफ्टवेयर वेब आधारित है और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से इस्तेमाल किया जा सकता है। इंग्लिश के अलावा सॉफ्टवेयर की हिन्दी में उपलब्धता हमारे हिन्दी क्षेत्र के किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। गन्ने में शोध शिक्षा विकास, विस्तार और उत्पादन से जुडे सभी लोगों के लिए यह सॉफ्टवेयर अत्यंत उपयोगी है। इसका उपयोग न केवल विकारों को पहचानने बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। इसका उपयोग करने के लिए जरूरी यूजर आई डी/पासवर्ड सॉफ्टवेयर में पंजीकरण करके लिया जा सकता है। गन्ना उत्पादन, सुरक्षा और इसके उत्पादों के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का काम और नाम हमेशा आगे रहा है। संस्थान के योगदानों का जिक्र करते हुए डा. साह ने बताया कि किसानों के लिए एक अभूतपूर्व योगदान है।

वर्ष : 10 ● अंक : 331 ● www.spashtawaz.com ● लखनऊ, रविवार, 25 मई 2014

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP-119/2010-12

स्पष्ट आवाज़

लखनऊ व गोरखपुर से एक साथ प्रकाशित

गन्ना अनुसंधान संस्थान ने विकसित की नई प्रणाली

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने गन्ना शोध यात्रा में एक महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। संस्थान ने गन्ने के प्रमुख नाशी कीटों, रोगों और पोषक तत्वों की कमी से होने वाले विकारों की पहचान के लिए एक विशेषज्ञ प्रणाली विकसित की है। यह एक कम्प्यूटर आधारित प्रणाली है जो गन्ने में विभिन्न जैविक और अजैविक तनाव कारकों के कारण उत्पन्न विकारों को पहचानने में सहायता करता तथा नियंत्रण के लिए आवश्यक उपाय सुझाते हैं। सर्वविदित है कि गन्ने में लगने वाले नाशी कीटों और रोग फसल को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। सही समय पर इनकी रोकथाम न होने से गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में 20 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। डा. एस. एस. हसन, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कम्प्यूटर विज्ञान) और उनकी टीम के अथक प्रयासों से संस्थान ने यह सफलता प्राप्त की है। गन्ना हमारे देश की प्रमुख नकदी फसल है जो चीनी उद्योग के लिए मुख्य कच्चा माल/निवेश है। देशभर में राज्यों के लगभग 5 करोड़ किसान और 5 लाख मजदूर इस उद्योग पर आजीविका एवं आर्थिक समृद्धि के लिए निर्भर हैं। डा. ए.के. साह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट सहकर्मी ने बताया कि 200 से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग 7000-10000 करोड़ का नुकसान होता है। कम्प्यूटर विज्ञान की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा। डा. हसन, ने बताया कि यह सॉफ्टवेयर वेब आधारित है और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से इस्तेमाल किया जा सकता है। इंग्लिश के अलावा सॉफ्टवेयर की हिन्दी में उपलब्धता हमारे हिन्दी क्षेत्र के किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। गन्ने में शोध, शिक्षा, विकास, विस्तार और उत्पादन से जुड़े सभी लोगों के लिए यह सॉफ्टवेयर उपयोगी है। इसका उपयोग न केवल विकारों को पहचानने बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। उपयोग के लिए जरूरी यूजर आई डी/पासवर्ड सॉफ्टवेयर में पंजीकरण करके लिया जा सकता है। इसके लिए ई मेल पर संपर्क किया जा सकता है। गन्ना उत्पादन, सुरक्षा और इसके उत्पादों के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का काम और नाम हमेशा आगे रहा है। संस्थान के योगदानों के बारे में डा. साह ने बताया कि किसानों के लिए एक अभूतपूर्व योगदान है। चीनी मिलों को इस विशेषज्ञ प्रणाली को किसानों तक पहुँचाने के लिए आगे आना चाहिये। राज्य सरकारों को भी इस तकनीक को बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए।

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, रविवार, 25 मई, 2014

'केनडीज' दूर करेगा गन्ने में लगने वाले रोग

.भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने गन्ना शोध यात्रा में एक और महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। संस्थान ने गन्ने के प्रमुख कीटों, रोगों और पोषक तत्वों की कमी से होने वाले विकारों की पहचान के लिए एक विशेषज्ञ प्रणाली (केनडीज) विकसित की है। यह एक कम्प्यूटर पर आधारित प्रणाली है जो गन्ने में विभिन्न जैविक और अजैविक तनाव कारकों के कारण उत्पन्न विकारों को पहचानने में सहायता करता और नियंत्रण के लिए आवश्यक उपाय बताता है।

आइआइएसआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एस. एस. हसन ने बताया कि यह सफलता उनकी टीम के अथक प्रयासों से ही संभव हो पायी है। उन्होंने बताया कि गन्ना हमारे देश की प्रमुख नकदी फसल है जो चीनी

आइआइएसआर

गन्ने के विकार को खत्म करने की नई प्रणाली विकसित

उद्योग के लिए मुख्य कच्चा माल,निवेश है। देश भर में तकरीबन 5 करोड़ किसान और 5 लाख मजदूर इस उद्योग पर आर्थिक रुप से निर्भर है।

इस मौके पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. ए के साह ने बताया कि 200 से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग 7000-10,000 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। केनडीज की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा। डा. हसन, बताते हैं कि यह सॉफ्टवेयर वेब आधारित है और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका उपयोग न केवल विकारों को पहचानने बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। डा. साह ने बताया कि चीनी मिलों को इस विशेषज्ञ प्रणाली को किसानों तक पहुँचाने के लिए आगे आना चाहिए। *वर्स.*

sunday pioneer
LUCKNOW | SUNDAY | MAY 25, 2014

IISR develops expert system to check yield loss in sugarcane

A group of scientists led by Dr Syed Sarfaraz Hasan, senior scientist worked for last 4 years and now the outcome is in the form of CaneDES

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

Indian Institute of Sugarcane Research (IISR), Lucknow has achieved a major landmark in the area of insects-pests, diseases and nutrient deficiency management in sugarcane.

A computer based expert system called CaneDES has been developed by the institute for diagnosing disorder/damage caused by various insect-pests, diseases and nutrient deficiency factors in sugarcane crop. It also is a guide for management of various biotic and abiotic stresses of sugarcane.

A group of scientists led by Dr Syed Sarfaraz Hasan, senior scientist worked rigorously for last 4 years and now the outcome is in the form of CaneDES with a sweet taste for sugarcane farmers and sugar industry in India.

It is well known that sugarcane has vital role in socio-economic development of our country as it is a major source of employment and income generation for our rural population.

Sugarcane is grown in more than sixteen states of India and is a major input source of the second largest agro-based sugar industry of the country.

Over 55 million farmers and 0.5 million rural people are directly or indirectly dependent on this crop.

Scientists informed that sugarcane, being a long duration crop, is infested by more than 200 insects and non-insect pests in our country. Further, more than 30 diseases are also found to affect cane crop in India.

Dr AK Sah, Principal Scientist and co-investigator said that every year farmers incur a loss of 10-20% in sugarcane production which accounts for about 35-70 million tonnes of cane.

"As a result huge monetary loss to the tune of 7,000-10,000 crores rupees per year is incurred by cane growers of the country. CaneDES may help the farmers in minimising the loss to a great extent by helping them adopt timely control measures against diagnosed disorders that appear in sugarcane crop. This will result in increased production and productivity of sugarcane which also help sugar industry in terms of increased availability of raw material ie sugarcane during crushing period" said Sah.

While discussing the features of CaneDES, Dr Hasan said that software has been developed in web environment, so that it can reach the remotest farmer of the country using internet.

All stakeholders involved in sugarcane research, education, development, extension and farming will be benefited from CaneDES for diagnosing the sugarcane disorders as well as educating themselves in sugarcane crop protection.